पाठ 7. ईमानदार बालक

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को ईमानदार बनने की सीख देना है। इस पाठ द्वारा बच्चे जान पाएँगे कि ईमानदार व्यक्ति सहज ही लोगों के हृदय में स्थान पा लेता है तथा जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

पाठ का सारांश

बसंत नाम का एक लड़का चौराहे के समीप सामान बेच रहा है। मज़दूरों के नेता राजकिशोर को देखकर वह उनसे सामान लेने की ज़िद करता है। बसंत राजकिशोर जी द्वारा दिए गए दस रुपए के नोट का छुट्टा कराने जाता है और मोटरगाड़ी की चपेट में आ जाता है। राजकिशोर जी के परिचित उनसे कहते हैं कि ऐसे लड़के लोगों को ठगते हैं और आपके पैसे अब नहीं मिलेंगे। मगर बसंत भला और ईमानदार लड़का था। वह अपने भाई प्रताप को राजकिशोर जी के बाकी पैसे देने के लिए उनके घर भेजता है। राजकिशोर जी बसंत की ईमानदारी से बहुत प्रभावित होते हैं। वे बसंत के घर जाते हैं और उसका इलाज करवाते हैं। ईमानदारी एक ऐसा गुण है जिससे मनुष्य दूसरों के हृदय में आसानी से जगह बना लेता है।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पहले **पठन-पूर्व चर्चा** में पूछे प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत करें। उसके पश्चात् पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पाठ का एक-एक अंश पढ़वाएँ। पाठ के महत्त्वपूर्ण अंशों का अर्थ समझाएँ। बच्चों को पाठ का मूल भाव समझाएँ। पाठ में निहित जीवन-मूल्यों को बच्चों में विकसित करने का प्रयास करें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- पूछें, आपको यह कहानी कैसी लगी?
- समझाएँ कि जीवन में जो भी काम करो पूरी मेहनत, लगन एवं ईमानदारी से करो। ईमानदार व्यक्ति सदैव समाज में सम्मान पाता है।
- क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आपको बस में, रास्ते में या अन्य किसी स्थान पर, किसी का पर्स अथवा कोई अन्य वस्तु पड़ी मिली हो तब आपने उसका क्या किया?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।